पढ़ा। वह कहने लगे कि हम मराठी पेपर्स नहीं पढ़ते हैं। हम राष्ट्रीय पेपर पढ़ते हैं। अब मैं आप से निवेदन करुंगा कि जनता की जो इस तरह की एक क्षेत्रीय भावना रहती है वह यह जो भाषा आदि को लेकर इलाकाई उपद्रव होते हैं वह क्षेत्रीय भाषा में ही दिखा सकते हैं। अब इस बारे में उन का जो स्टेटमेंट पेपर्स में आया वह उन्होंने नहीं देखा क्योंकि वह देखना ही नहीं चाहते थे। मैंने जो कहा है शुरू से कि हम आत्म निरीक्षण नहीं करते हैं वह दरअसल वास्तविकता पर आधारित है। बम्बई में जो हुआ है वह इसी का परिणाम है। कम से कम 50-60 आदमी मारे गये होंगे। यहां कहा है कि बम्बई की सरकार ने गम्भीर उपाय योजनाएं नहीं कीं और इस लिए यह सब आन्दोलन हुआ और प्राणहानी व वित्त की हानी हुई लेकिन सन 1955 में कितने लोग मारे गये थे। महाराष्ट्र सरकार ने खम्भीर उपाय योजना की थी लेकिन सन् 55 में काफी लोगों का 105 आदमियों का महाराष्ट्र के रास्ते में खून बहाया गया था। अभी भी आप कहते हैं कि महाराष्ट्र सरकार ने खम्भीर उपाय योजना नहीं की। लेकिन ऐसा तो वही कह सकता है जोकि वास्तविकता से अपनी आंखें मूंद ले। दरअसल महाराष्ट्र सरकार ने जितनी खम्भीर उपाय योजना की है कि जरूरत ही नहीं थी। मैं तो कहूंगा की महाराष्ट्र सरकार ने एक ही गलती की है कि वह जो उनके नेता है उन को यरवदा जेल में डाल दिया है इसलिए उनके फालोअर्स बगैर नेता के होकर नियंत्रणहीन हो गये हैं और नेता की भी अगर वह जेल में बन्द कर दिए जाते हैं तो उनकी जबाबदारी खत्म हो जाती है। अगर नेता को बाहर ही रखा जाता तो मैं समझता हूं कि वहां पर जो प्राण हानि व वित्त हानि हुई हैं वह न हुई होती।

मैं आप का ध्यान कई घटनाओं पर दिलाना चाहता हूं। जब पिछले दो सप्ताहों के पहले महाराष्ट्रीयों पर हमले होते थे तब किसी ने अपनी आवाज नहीं निकाली। सब चुप बैठे थे पर जब बम्बई के रास्तों पर खून बहाया गया, वित्त हानि हो गई, प्राण हानि हो गई तब आवाज आती है। मैं पूछना चाहता हूं कि जब बम्बई के रास्ते पर खून बहता था, वित्त हानि होती थी, प्राण हानि होती थी, तब आप कहां थे ? क्या आप का कर्तव्य नहीं था कि वहां जा कर जो लोग आन्दोलन करते थे, लूट मार करते थे, उन से कहते कि यह सब बन्द करो ? लेकिन कोई नहीं गया।

एक माननीय सदस्य : वहां पत्थरों का डर था.

श्री शिकरे : जब नेता लोग पत्थरों से डरते हैं तो लोगों में कार्य कैसे करेगें ?

मैं कहूंगा, जैसा शुरू में कहा, कि सिर्फ दूसरे को ऐक्यूज करमे से काम नहीं चलेगा। इल्जाम लगाना तो आसान है, लेकिन कुछ आत्म-निरीक्षण करना भी जरूरी है।

18.06½ hrs.

BUSINESS ADVISORY COMMITTEE
Twenty-eight Report

SHRI SRADHAKAR SUPAKAR (Sambalpur) : I beg to present the Twenty-eighth report of the Business Advisory Committee.

18.07 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday, February 19, 1969. Magha 30, 1890 (Saka)